पाठ -८ कढ़ाई कला

सिलाई की तरह कढ़ाई भी एक कला है। इसका ज्ञान भी सबके लिए आवश्यक है। जिस प्रकार सुंदर वस्त्र और आभूषण से शरीर का सौंदर्य बढ़ जाता है, उसी प्रकार कढ़ाई से वस्त्र की शोभा बढ़ जाती है तथा जहाँ पर उसका उपयोग किया जाता है उस वस्त्र की सुंदरता और आकर्षण बढ़ जाता है।

कढ़ाई कला का ज्ञान एकदम व्यावहारिक है। बिना व्यवहार में लाए इसकी उपयोगिता, महत्व एवं आकर्षण का अनुमान लगाना कठिन है। इसे सीखने के बाद, पहनने वाले वस्त्र-साड़ियाँ, ब्लाउज, कुर्ता, फ्राक, पेटीकोट, बिब, रुमाल आदि के अतिरिक्त घर के प्रयोग की वस्तुएँ- चादर, पर्दे, मेजपोश, टेª-कवर, टिकोजी, नैपकिन, लंच मैट्स (खाने की मेज पर बिछाने के लिए) आदि पर कढ़ाई करके घर की शोभा बढ़ा सकते हैं।

कढ़ाई के लिए आवश्यक सामग्री या उपकरण

कढ़ाई के लिए नमूना, वस्त्र, विभिन्न प्रकार के रंगीन धागे, सूई, फ्रेम, छोटी कैंची, ट्रेसिंग पेपर, कार्बन पेपर, पेंसिल आदि सामग्री की आवश्यकता पड़ती है।

कढ़ाई कला की उपयोगिता

- इसका ज्ञान व्यावहारिक है, इसलिए हम अपने जीवन में इससे बहुत लाभ उठा सकते हैं।
- मनचाहे वस्त्र पर मनचाही कढ़ाई कर सकते हैं।
- घर के वस्त्रों पर कढ़ाई करके उसकी सुंदरता बढ़ा सकते हैं।
- खाली समय का अच्छा उपयोग कर सकते हैं।

- कम खर्च में कढ़ाई करके आकर्षक वस्त्र, मेजपोश, चादर इत्यादि तैयार कर सकते हैं।

किसी भी वस्त्र पर कढ़ाई करने के लिए सबसे पहले वस्त्र पर नमूना छापना पड़ता है इसलिए नमूना छापने के साधारण नियमों और विधियों की जानकारी प्राप्त करना आवश्यक है। थोड़ी सी असावधानी से नमूना और कढ़ाई दोनों की सुंदरता नष्ट हो सकती है।

कपड़े पर नमूना या डिजाइन उतारने की दो विधियाँ हैं- 1. ठप्पे द्वारा डिजाइन छापना 2. ट्रेस करना।

1. ठप्पे द्वारा डिजाइन छापना:- बाजार में लकड़ी और प्लास्टिक के ठप्पे मिलते हैं, जिसमें विभिन्न प्रकार की डिजाइन बनी रहती हैं। इसमें रूई से हल्का सा कच्चा रंग (जो आसानी से छूट जाए) लगाकर वस्त्र पर छाप लेते हैं।

2. ट्रेस करना:- कपड़े पर नमूना ट्रेस करने की निम्नलिखित विधियाँ हैं-

(क) कार्बन पेपर द्वारा छापना - कार्बन पेपर लाल, नीला, काला और सफेद रंगों में मिलता है। वस्त्र के रंग के अनुसार कार्बन पेपर का चुनाव करना चाहिए। जिस रंग से छापने पर वस्त्र पर नमूना स्पष्ट दिखाई दे और काढ़ने में सुविधा हो, उसी रंग के कार्बन पेपर से छापना चाहिए।

(ख) नील द्वारा छापना - बाजार में नमूने की पुस्तिका मिलती है, जिसमें छिद्रों द्वारा नमूने बने होते हैं। थोड़ी सी नील स्प्रिट में घोल लेते हैं। फिर नमूने को वस्त्र पर रखकर पिन लगा देते हैं ताकि कपड़ा और नमूना हिले नहीं। इसके बाद नील के घोल में रूई डुबाकर, हल्का सा निचोड़कर नमूने के छिद्रों पर हलके दबाब के साथ फेरने से नमूना वस्त्र पर छप जाता है। कढ़ाई करने के बाद धोने से नील धुल जाती है।

(ग) गेरू द्वारा नमूना छापना - कार्बन पेपर न मिलने पर इस विधि से भी नमूना ट्रेस कर सकते हैं। नमूने के पीछे की ओर गेरू घोलकर पोत देते हैं। सूखने के बाद गेरू

वाला भाग कपड़े पर रखकर, हल्के दबाव के साथ नमूने पर पेंसिल फेरने से नमूना वस्त्र पर छप जाता है।

(घ) काँसे की कटोरी से नमूना छापना - किसी भी वस्तु पर कटी हुई डिजाइन को उतारने के लिये एक सादे कागज को डिजाइन के ऊपर रख कर काँसे की कटोरी की चिकनी तली से रगड़ने पर कागज पर नमूना उभर आता है। तत्पश्चात् उसे पेंसिल से सही आकार दे देते हैं। इसी प्रकार कपड़े पर भी छाप सकते हैं किन्तु कागज पर डिजाइन अच्छी तरह उभरती है।

(ङ) अक्स द्वारा नमूना उतारना - इस विधि का प्रयोग हल्के महीन कपड़ों में ही होता है जैसे- वायल, मलमल, अद्धी, लोन आदि। यह कपड़े कुछ पारदर्शी होते हैं। इनके नीचे डिजाइन रखने पर वह स्पष्ट दिखाई देती है। ऊपर से पेंसिल फेर कर वस्त्र पर नमूना उतार लेते हैं।

कपड़ा पर नमूना छापते समय ध्यान रखने योग्य बातें-

- वस्त्र के अनुरूप छोटा या बड़ा नमूना चुनना चाहिए।
- वस्त्र पर नमूना छापने से पूर्व नमूना और वस्त्र पर काढ़ने का स्थान निश्चित कर लेना चाहिए क्योंकि एक बार नमूना छप जाने के बाद स्थान बदलना कठिन होता है।
- नमूना स्पष्ट छापना चाहिए, जिससे कढ़ाई करने में सुविधा हो।
- कपड़े पर कार्बन पेपर और नमूना रखने के बाद पिन लगा लेना चाहिए ताकि वह स्थिर रहे और इधर-उधर न हिले।
- नमूना नुकीली पेंसिल से उतारना चाहिए।
- नमूना समतल स्थान (मेज या तख्ता) पर रखकर छापना चाहिए।

नमूना छापने के लिए- ट्रेसिंग पेपर, कार्बन पेपर, पिन, पेंसिल, नमूना, नील, गेरू, समतल स्थान की आवश्यकता पड़ती है। जिस विधि से छापना हो उसकी सभी सामग्री एकत्रित करके छापना आरम्भ करना चाहिए।

कढ़ाई करते समय ध्यान देने योग्य बातें-

- वस्त्र पर नमूना साफ और स्पष्ट छपा हो।
- नमूना वस्त्र के अनुसार छोटा या बड़ा हो।
- कढ़ाई किए जाने वाले वस्त्र का रंग पक्का हो।
- धागों का रंग भी पक्का और चमकदार हो।
- फ्रेम लगाकर कढ़ाई करने से सफाई आती है।
- नमूना काढ़ने के लिए उचित टाँकों का चुनाव करना चाहिए।

कढ़ाई को सुंदर, आकर्षक और स्वाभाविक बनाने के लिए यह आवश्यक है कि रंगों का चुनाव बहुत अच्छा हो। इसके लिये निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखना चाहिए-

- काढ़ने वाले वस्त्र का रंग ऐसा हो कि उस पर कढ़ाई का उभार अच्छा दिखाई दे।
- धागों को कपड़े पर रखकर देख लेना चाहिए कि कौन सा रंग अच्छा लगेगा।
- फूल के लिये लाल, गुलाबी, पीला, नारंगी, बैंगनी आदि रंगों के विभिन्न हल्के एवं गहरे रंगों का उपयोग करना चाहिए।
- पत्ती के लिये हरे रंग का चुनाव करना चाहिए। हरे शेडेड रंग के धागों का भी प्रयोग कर सकते हैं।
- अलंकारिक नमूनों को हम समान रंग नीला, लाल, बैगनी या लाल, पीला, नारंगी रंगों से काढ़ सकते हंै।
- कहीं-कहीं हम अलंकारिक नमूनों में विरोधी रंग जैसे-लाल के साथ हरा और पीले के साथ नीले रंग से कढ़ाई कर सकते हैं।
- रंगीन वस्त्र पर हम सफेद रंग से भी फूल काढ़ सकते हैं।
- डाल, शाखाएँ तथा तना काढ़ने के लिये भूरे रंग के हल्के या गहरे शेड का चुनाव कर सकते हैं। कपड़े के रंग को भी ध्यान में रखना चाहिए।
- कढ़ाई करने के पूर्व धागों की जाँच कर लेनी चाहिए। कहीं पानी से धोने पर रंग तो नहीं छूट रहा है। कच्चे रंग के धागे से कढ़ाई नहीं करनी चाहिए, क्योंकि धुलने पर रंग छूटकर वस्त्र एवं नमूने को खराब कर देता है जिससे परिश्रम, धन एवं समय व्यर्थ हो जाता है।

कढ़ाई के विभिन्न टाँके

कढ़ाई करने के लिए, विभिन्न टाँको या स्टिच का प्रयोग किया जाता है। एक ही नमूने में कई प्रकार के स्टिच का प्रयोग करते हैं जैसे- डाल, स्टेम स्टिच या चेन स्टिच। फूल और पत्ती लेजी- डेजी, साटन स्टिच या भराई के टाँके से बना सकते हैं। अतः कई प्रकार के टाँकों (स्टिच) को सीखना आवश्यक है।

रनिंग स्टिच (कच्चा टाँका)

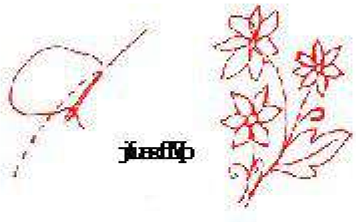

यह स्टिच कच्चे टाँके के समान बनाई जाती है। यह कढ़ाई काथा, के नाम से बहुत प्रचलित है। लोगों में इसका बहुत आकर्षण है। जार्जट,वायल और सिल्क की साड़ियाँ, दुपट्टा, चादर, मेजपोश सभी इस कढ़ाई से काढ़े जाते हैं।

क्रॉस स्टिच

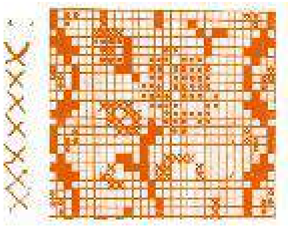

यह कढ़ाई क्रॉस (ग) करके बनाते हैं। मैटी के कपड़े पर बिना नमूना छापे डिजाइन को देख कर और क्रॉस को गिन कर नमूना काढ़ते हैं। क्रॉस स्टिच के नमूने साधारण नमूने से भिन्न होते हैं।

फिश बोन स्टिच

इसे मछली काँटा स्टिच भी कहते हैं। यही कढ़ाई हल्के और महीन वस्त्र में उल्टी ओर से काढ़ने पर शैडो वर्क की कढ़ाई बनती हैं। सीधी ओर से फूल पत्ती और कोई भी अलंकारिक डिजाइन भरकर बना सकते हैं। रूमाल के किनारे भी बना सकते हैं।

काश्मीरी स्टिच

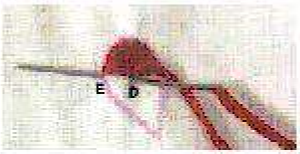

इस टाँके को बनाते समय सबसे पहले सुई को कपड़े में से ऊपर निकाल लेते हैं। पहली पंक्ति में बारी-बारी से एक लम्बा और एक छोटा टाँका लें। यह टाँके पास-पास लें। ध्यान रखें कि टाँके रेखा (डिजाइन) से बाहर न जाने पाऐ। दूसरी पंक्ति में टाँकों की लम्बाई बराबर रखें। ताकि कढाई एक समान हो। यदि आपको शेड दार कढ़ाई करनी हो तो इस कढ़ाई के लिए शेडदार धागा का प्रयोग करें। इस कढ़ाई से साड़ियाँ, शॉल एवं सूट के बार्डर आदि काढ़े जाते हैं।

अभ्यास

1. बहुविकल्पीय प्रश्न

(1). रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

(क) फ्रेम लगाकर काढ़ने से .... नहीं आता है।

(ख) कढ़ाई .... रंग के धागे से नहीं करना चाहिए।

(ग) मछली काँटा स्टिच को उल्टी ओर से काढ़ने पर...... की कढ़ाई बनती है।

(घ) कढ़ाई का नमूना......... से उतारना चाहिए।

(2) सही (T) या गलत (F) का चिह्न लगाइए।

(क) रूमाल पर छोटे नमूने अच्छे लगते हैं।( )

(ख) काढ़ते समय धागा दाँत से काटना चाहिए।( )

(ग) फ्रेम गोल होता है।( )

(घ) कच्चे रंग के धागे से कढ़ाई कर सकते हैं।( )

2. अतिलघु उत्तरीय प्रश्न-

(क) नमूना छापने के लिए दो आवश्यक वस्तुओं के नाम लिखिए।

(ख) क्रास स्टिच किस प्रकार के कपड़े पर बनाई जाती है ?

3. लघु उत्तरीय प्रश्न-

(क) कढ़ाई करने के किन्ही चार टाँको के नाम लिखिए।

(ख) सुंदर कढ़ाई के लिए ध्यान रखने वाली दो बातों को लिखिए।

4. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न-

(क) ट्रेस करने की कौन-कौन सी विधियाँ हैं ? किन्हीं तीन विधियों का वर्णन कीजिए।

(ख) कढ़ाई कला की उपयोगिता लिखिए।

प्रोजेक्ट वर्क-

विभिन्न टाँकों से रूमाल पर कढ़ाई करके अपने मित्रों और भाई-बहिनों को उपहार में दीजिए।